मन का संतोष

पृथ्वी पर मनुष्य - विचार करता है।

संदर्भः- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'मन का संतोष' नामक शीर्षक से अवतरित है। इसके रचयिता भूतपूर्व प्रधानमंत्री और कवि 'अटलबिहारी वाजपेयी' है।

प्रसंगः- कवि ने इस कविता की रचना सन् 1994 में न्यूयार्क में की थी। इसके माध्यम से कवि मनुष्य के उन भावों का वर्णन करता है जिसमें वह इकट्ठे होकर समूह में रहना पसंद करता है। मनुष्य की मन-स्थिति का वर्णन करते हैं कि जब वह अपने मन की परतों को खोलता है और अपने कर्मों के लेखे-जोखे का अवलोकन करता है। तब वह आत्मग्लानि से मुक्त होकर स्वीकारता है कि उसने जो कुछ किया है वह सही समझकर किया है। उसने किसी को जान-बूझकर ठेस नहीं पहुँचाई। तब वह यह मानता है कि उसने अपने जीवन को सार्थक बनाया है। किए हुए कार्यों के समय किसी को

व्याख्याः- इसमें कवि कहते हैं कि मनुष्य पृथ्वी पर एक ऐसा प्राणी है जो समूह में अकेला और अकेले में स्वयं को हमेशा चारों ओर से घिरा हुआ अनुभव करता है। वह स्वयं ही पृथ्वी पर समूह में रहना पसंद करता है।

इसमें कवि कहते हैं कि मनुष्य समूह में सुखपूर्वक रहना पसंद करता है। पहले वह अपना घर बसाता है फिर परिवार से शुरु होकर अपनी बस्तियाँ बसाता है। तदुपरांत वह गलियाँ, गाँव, कस्बा और शहर आदि को अपनी सुविधानुसार सजाने का प्रयत्न करता है।

इसमें कवि कहते हैं कि मनुष्य इस संसार में स्वयं को बहुत सुसंस्कृत और सभ्य होने की व्यर्थ दौड़ में अपने संस्कारों और विनम्र भावों को पीछे छोड़ता चला जाता है। वह यह भी सोचता है कि मैं अपने बुद्धि-विवेक और ज्ञान से प्रकृति को अपने वश में (विजय प्राप्त) कर लुंगा। वह अपने प्रयासों से मृत्यु को भी अपनी मुट्ठी में करना चाहता है। वह मृत्यु को भी अपनी इच्छानुसार वरण करना चाहता है।

इस काव्यांश में कवि कहते है कि मनुष्य अपनी रक्षा के लिए दूसरों के विनाश की सामग्री एकत्रित करता है। उसने मानवता के विनाश के लिए और अपने सुखों के साधनों की आवश्यकता की पूर्ति को प्राप्त करने के लिए आकाश को अभिशप्त और पृथ्वी के श्रृंगार को प्रकृतिहीन (पेड़-पौधों और प्रकृति) कर रहा है।

कवि कहते है कि मनुष्य अपने सुखों की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों को प्रयोग कर वायुमंडल को भी विषाक्त कर रहा है। वह अपने संसाधनों (कारखानों और उनसे निकलने वाले प्राणघातक विषैले रसायन से जल को भी दूषित करने में संकोच नहीं कर रहा है। जब वह अपने कुकृत्यों के कारण एकान्त में विचार करता है कि उसने अपने जीवन में क्या खोया है और क्या पाया है? वह एकान्त चाहे घर का कोना, भीड़-भाड़ युक्त बाज़ार या प्रकाश की तीव्रगति से उड़ता हुआ वायुयान, कोई वैज्ञानिक प्रयोगशाला, धार्मिक स्थल अथवा श्मशान (वीरान स्थान)। कवि कहते है कि जब वह स्वयं (आत्मालोचन) आत्मविश्लेषण करता है और मन में छिपे हुए रहस्यों को एक एक करके परोक्ष में देखता है तब वह स्वयं से कहता है। कि उसने जीवन के लेखे-जोखे में क्या हानि और क्या लाभ पाया। उसने अपने जीवन में क्या खोया अथवा क्या पाया। इसका भी वह हिसाब-किताब नहीं रखता है। जब वह स्वयं अपने जीवन का आंकलन करता है तब वह उसे भली प्रकार निष्पक्ष, निष्ठुर होकर निरखता परखता है तो वह उसमे स्वयं को निस्सहाय

पाता है। वह अपने मन से यही कहता है कि उसने जो कुछ किया है वह सत्य र सही है। वही उसका महत्व भी है।

कवि पुनः कहते है कि जब मनुष्य अपनी अंतिम यात्रा के अवसर पर विदा के समय उसके प्रियजन उसका साथ छोड़ देते है और जब उसकी सारी शक्तियाँ क्षीण हो जाती है, शरीर भी उसका साथ नहीं देता। उस समय वह स्वयं से खेद प्रकट करता है। यदि उस समय कोई उससे कह सकता है कि उसने जो कुछ भी जीवन में कर्तव्यनिष्ठ होकर जो भी कार्य किया है किया है। वह सब उचित है। उसमें किसी को जानबूझकर चोट पहुँचाने (अपमानित करने) के लिए नहीं किया गया था। यह तो उसने सहज कर्म समझकर कार्य किया था। तब उसका अस्तित्व सार्थक है और उसका जीवन भी सफल होता है।

विशेषः- 1. इसमें कवि ने मनुष्य के विभिन्न रूपों का वर्णन करते हैं।
2. भाषा - साहित्यिक हिन्दी खड़ी बोली।
3. शैली - वर्णनात्मक शैली।
4. अलंकार- अनुप्रास अलंकार।
5. छंद - मुक्तक छंद।
6. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।